ANNEXURE -A

DAV PUBLIC SCHOOLS, ODISHA ZONE

NAME OF THE EXAM-PA- III SUBJECT- HINDI (B) CLASS : IX

BLUE PRINT OF QUESTION PAPER

Sl No.	Chapters / units	Marks Allotted in Syllabus	LA (5 marks)	SA-II (3 marks)	SA-I (1 marks)	VSA-I (1 marks)	TOTAL
1	अपठित गद्यांश	05			1×5		05
2	व्याकरण	10				1×10	10
3	पाठ्य -पुस्तक	20		3×4	1×8		20
4	लेखन	05	5×1				05
	MARKS	40	05	12	13	10	40

R- Remembering -12.5% of 40 marks (5 marks)
U- Understanding -35% of 40 marks (14 marks)
A- Application -25% of 40 marks (10 marks)
H- Higher Order Thinking-15% of 40 marks (6 marks)
E- Evaluation-12.5% of 40 marks (5 marks)

ANNEXURE -B

DAV PUBLIC SCHOOLS, ODISHA ZONE

NAME OF THE EXAM-PA- III SUBJECT- HINDI (B) CLASS : IX

QUESTIONWISE ANALYSIS

Sl No	Chapters / units	Forms of question	Marks Allotted	(R), (U), (A), (H), (E)
1	अपठित गद्यांश	SA-I	05	(U)
2	व्याकरण	VSA-I	02	(A)
3	व्याकरण	VSA-I	02	(A)
4.	व्याकरण	VSA-I	03	(A)
5.	व्याकरण	VSA-I	03	(A)
6.	पाठ्यपुस्तक	SA-I	04	(R)
7.	पाठ्यपुस्तक	SA-II	03	(H)
8.	पाठ्यपुस्तक	SA-I	04	(R), (U)
9.	पाठ्यपुस्तक	SA-II	03	(H)
10.	संचयन	SA-II	06	(U)
11.	लेखन	LA	05	(E)

ANNEXURE –C

DAV PUBLIC SCHOOLS, ODISHA ZONE

NAME OF THE EXAM-PA- III SUBJECT- HINDI (B) CLASS: IX

MARKING SCHEME

क्रम संख्या	**उत्तर-संकेत**	कुल अंक	पृष्ठ संख्या
1	(क) भारतीय समाज की संस्कृति को धर्म प्रधान संस्कृति होने के कारण अध्यात्म प्रधान संस्कृति कहा जा सकता है। (ख) सामान्यतया भारतीय समाज के लोग अपने अतीत के प्रति अत्यधिक अनुराग का भाव रखते हैं। (ग) पाश्चात्य संस्कृति को भौतिकता प्रधान संस्कृति के रूप में देखा जाता है। (घ) भारतीय लोगों के लिए आज वैज्ञानिक एवं तार्किक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है । (ङ) भारतीय समाज की संस्कृति (अन्य उचित शीर्षक भी मान्य होगा)।	**(1×5=5)**	अपठित गद्यांश
2.	(क) वाक्य में प्रयुक्त सार्थक शब्द पद कहलाते हैं। (ख) वर्णों के सार्थक मेल से शब्द बनता है।	**(1)** **(1)**	**व्याकरण**
3.	(क) (i) माँ ने कहा,"प्रकृति का हमेशा सम्मान करना चाहिए।" (ii) हे भगवान! गरीबों के दुख कम करो ।	**(1)** **(1)**	**व्याकरण**
4.	(क) (i) गणेश=गण+ईश (ii) लोकैषणा= लोक+ एषणा (ख) प्रति+एक= प्रत्येक	**(1+1=2)** **(1)**	**व्याकरण**
5.	(क) विधानवाचक वाक्य (ख) संदेहवाचक वाक्य (ग) प्रश्नवाचक वाक्य	**(1×3=3)**	**व्याकरण**
6.	(क) महादेव भाई ने गाँधी जी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' का अंग्रेजी अनुवाद किया। (ख) महादेव भाई अपना परिचय गाँधी जी के 'हम्माल','पीर-बावर्ची-भिश्ती-खर' के रूप में देते थे। (ग)गाँधी जी 'नवजीवन', 'यंग इंडिया' नामक दो पत्रिकाओं का संपादन किया करते थे । (घ) गाँधी जी से मिलने से पहले महादेव भाई, भारत सरकार के अनुवाद विभाग में नौकरी करते थे।	**(1×4=4)**	**पृ- 59** **पृ-56** **पृ-50** **पृ-58**
7.	महादेव भाई समाचार-पत्र, मासिक-पत्र और पुस्तकें पढ़ते तथा 'यंग इंडिया' और 'नवजीवन' के लिए लेख लिखते। वे गाँधी जी के साथ लगातार चलने वाली यात्राएँ करते। वे हर स्टेशन पर उपस्थित जनता का विशाल समुदाय, जगह-जगह आयोजित सभाएँ, लोगों से मुलाकातें, बैठकें और बातचीत करते। इनके बीच वे अपने लिए भी मुश्किल से समय	**(3×1=3)**	पृ-53

	निकाल पाते। इस प्रकार काम में उनके लिए दिन-रात बराबर था।		
8.	(क) कवि एक पत्र छाँह भी माँगने से इसिलए मना करता है, क्योंकि संघर्षरत व्यक्ति को जब एक बार रास्ते में सुख मिलता है, तब उसका ध्यान संघर्ष के मार्ग से हट जाता है।मनुष्य को सहारे की आदत पड़ जाती है । (ख) अग्निपथ का अर्थ जीवन की कठिनाई/संघर्ष से पूर्ण मार्ग है। (ग) 'अग्निपथ' कविता के कवि ने कर्मठता पूर्वक जीवन में संघर्ष करना या चुनौतिओं के बाद भी जीवन का चलना को महान दृश्य कहा है। (घ) कवि के अनुसार जीवन पथ पर हम आँसू, पसीने,खून से सराबोर होते हुए आगे बढ़ते हैं।	**(1×4=4)**	पृ-82
9.	कवि मनुष्य से यह अपेक्षा करता है कि वह अपना लक्ष्य पाने के लिए सतत प्रयास करे और लक्ष्य पाए बिना रुकने का नाम न ले। लक्ष्य के पथ पर चलते हुए वह न थके और न कभी रुके। इस पथ पर वह छाया या अन्य आरामदायी वस्तुओं की उपेक्षा करे तथा विघ्न बाधाओं को देखकर साहस न खोए।	**(3×1=3)**	पृ-74
10.	(क) त्रिपुरा में विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोग बाहरी क्षेत्रों से आकर बस गए हैं। इस प्रकार यहाँ अनेक धर्मों का समावेश हो गया है। छोटा-सा राज्य त्रिपुरा हिन्दू, मुसलमान, बौद्ध और ईसाई धर्म को समान भाव से महत्त्व देता है। तब से यह राज्य 'बहुधार्मिक समाज' का उदाहरण बन गया है। (ख) लेखक ने उत्तरी त्रिपुरा जिले के मुख्यालय कैलासशहर के जिलाधिकारी से मुलाकात की। जिलाधिकारी ने आलू की खेती के विषय में लेखक को यह जानकारी दी कि आलू की बुआई के लिए आमतौर पर पारंपरिक आलू के बीजों की ज़रूरत दो मीट्रिक टन प्रति हेक्टेयर पड़ती है। इसके बरक्स टी.पी.एस की सिर्फ़ 100 ग्राम मात्रा ही एक हेक्टेयर की बुआई के लिए काफ़ी होती है। त्रिपुरा की टी.पी.एस का निर्यात अब न सिर्फ असम, मिजोरम, नागालैंड और अरुणाचल प्रदेश को बल्कि बांग्लादेश, मलेशिया और विएतनाम को भी किया जा रहा है।		संचयन पृ-20 पृ-24
11.	**<u>संवाद लेखन</u>** अभिव्यक्ति - 1 अंक विषयवस्तु - 3 अंक भाषा- 1 अंक	**5**	लेखन

****